देवनागरी लिपि की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:–

➢ **देवनागरी लिपि की अन्य लिपियों से समानता:–** भारत के अधिकतम प्रान्तों में हिन्दी की लिपि ही चलती है। भारत की लगभग सभी भाषाओं की लिपियाँ देवनागरी लिपि से उपजी हैं अतः उनकी देवनागरी लिपि से पर्याप्त समानता है। इसी के कारण अन्य भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि सीखना आसान व सुविधाजनक है। भारत के अधिकतम प्रान्तों में देवनागरी लिपि का प्रयोग किया जाता है। देवनागरी लिपि जानने वाला गुरमुखी, गुजराती, बंगाली, मराठी आदि लिपियाँ आसानी से सीख जाता है। अतः देवनागरी लिपि अपनी इस विशेषता के कारण अधिक परिचित लिपि है।

➢ **देवनागरी लिपि के शब्द–संयोजन की विशेषता:–** देवनागरी लिपि के अक्षर सुन्दर होने के साथ उनके शब्द संयोजन में बहुत सी ध्वनियाँ थोड़े में व्यक्त की जा सकती हैं अर्थात् वे बहुत कम स्थान लेती हैं। उदाहरणार्थ यदि रेलवे स्टेशन शब्द को अंग्रेजी भाषा की रोमन लिपि में लिखे तो उसमें चौदह अक्षर लिखने पड़ेंगे। देवनागरी लिपि को पढ़ने में समय भी कम लगता है तथा पढ़ने में गति भी तीव्र होती है।

➢ **देवनागरी लिपि के शब्दों के उच्चारण एवं लेखन में समानता:–** हिन्दी भाषा का वर्ण विन्यास ध्वन्यात्मक है। देवनागरी लिपि में एक निश्चित ध्वनि के लिए एक निश्चित वर्ण का प्रयोग किया जाता है। रोमन और फारसी लिपियों में इस प्रकार का कोई निश्चित नियम नहीं है। उदाहरणस्वरूप अंग्रेजी में 'सी' और 'के' दोनों 'क' के लिए प्रयुक्त होते हैं। परन्तु हिन्दी में एक ध्वनि के लिए एक ही वर्ण है। हिन्दी भाषा में जो लिखा जाता है वही बोला जाता है।

➢ **मात्राओं में स्पष्टता:–** देवनागरी लिपि मात्राओं की दृष्टि से परिपूर्ण है। अन्य लिपियों की अपेक्षा ह्रस्व व दीर्घ मात्राओं में स्पष्टता है। देवनागरी लिपि में स्वरों के स्थान पर उनकी मात्राओं का प्रयोग होता है। ये मात्राएँ व्यंजनों के साथ मिला कर लिखी जाती हैं। अंग्रेजी की रोमन लिपि में यह अन्तर स्पष्ट नहीं होता जैसे ए वर्ण 'अ' और 'आ' दोनों के लिए प्रयुक्त होता है।

Scanned by TapScanner

➢ **अनुवाद की सहजताः–** देवनागरी लिपि समृद्ध लिपि मानी जाती है। इसमें अन्य भाषाओं के अतिरिक्त साहित्य का अधिकतम अनुवाद हुआ है क्योंकि हिन्दी अधिकतम लोगों द्वारा समझी जाती है। इस लिपि के शब्द भण्डार की विशालता ने अनुवाद के कार्य को सुगम बनाया है।

➢ **देवनागरी लिपि की शिक्षण व्यवस्था सुविधाजनकः–** देवनागरी लिपि को शिक्षण व्यवस्था में सुविधा है क्योंकि इस लिपि का ध्वनित व लिखित रूप एक है। इसके 16 स्वर तथा 33 व्यंजन हैं। प्रत्येक लिपि चिह्न एक ही ध्वनि का बोध कराता है।

➢ **स्वर का स्वतन्त्र एवं मात्रा के रूप में प्रयोगः–** देवनागरी लिपि में स्वर स्वतन्त्र एवं मात्राओं के रूप में भी व्यवहार होते हैं। ह्रस्व की मात्रा का लुप्त होकर व्यंजन में समा कर अपना कार्य करना देवनागरी की विशेषता है। जैसे 'क' में ह्रस्व की मात्रा अलग नहीं है जबकि रोमन में 'K' के साथ 'A' लिखना पड़ता है।

➢ **अन्य भाषाओं को प्रस्तुत करने की क्षमताः–** देवनागरी लिपि देश की ही नहीं बल्कि विश्व की अन्य भाषाओं को भी प्रस्तुत करने की क्षमता रखती है। देवनागरी लिपि में वर्णों की बहुलता के कारण केवल संस्कृत, मराठी, हिन्दी, गुजराती, बंगला आदि भाषाओं की ही नहीं, वरन् संसार की लगभग सभी भाषाओं की ध्वनियों को सरलता तथा स्पष्टतापूर्वक अंकित किया जा सकता है।

➢ **संक्षेप में लिखने की सुविधाः–** लिपि की वैज्ञानिकता की दृष्टि से उसमें संक्षेप में लिखने की सुविधा का होना महत्वपूर्ण है। रोमन लिपि में अंग्रेजी शब्द 'MOODY' संक्षेप में लिखा नहीं जा सकता, लेकिन देवनागरी में यही शब्द संक्षेप में इस प्रकार लिखा जा सकता है मूडि। इसलिए देवनागरी लिपि एक वैज्ञानिक लिपि है।

Scanned by TapScanner

➢ **प्रत्येक ध्वनि के लिए अलग लिपि चिह्नः–** देवनागरी लिपि में लगभग प्रत्येक ध्वनि के लिए अलग लिपि चिह्न हैं। अन्य लिपियों में एक ध्वनि के लिए दो तीन लिपि चिह्न देखने को मिलते हैं। जैसे फारसी लिपि में "स' ध्वनि के लिए "सीन, स्वाद और से' तीन लिपि चिह्न मिलते हैं। रोमन लिपि में (क) ध्वनि के लिए 'k, c, ch, q' चार लिपि चिह्नों का प्रयोग होता है।

➢ **गत्यात्मक तथा व्यवहारोपयोगीः–** देवनागरी लिपि में स्वरों के स्थान पर उनकी मात्राओं का प्रयोग किया जाता है जिससे शब्दों का आकार अपेक्षाकृत छोटा हो जाता है। इस प्रकार कम समय में गति के साथ शब्द लिखने की सुविधा इसे गत्यात्मक तथा व्यवहारोपयोगी बनाती है।

➢ **प्रत्येक लिखित वर्ण का उच्चारणः–** देवनागरी लिपि में प्रत्येक लिखित वर्ण का उच्चारण किया जाता है। परन्तु रोमन लिपि में कुछ वर्ण लिखे तो जाते हैं। परन्तु उनका उच्चारण नहीं किया जाता। जैसे knife, knight में k तथा Night में gh मौन वर्ण हैं।

➢ **लेखन में सुविधाः–** देवनागरी लिपि बाईं से दाईं ओर लिखी जाती है। इस प्रकार लिखने में हाथ के संचालन में सुविधा होती है जो लेखन में सहायता प्रदान करती है।

➢ **लिपि की सुपाठ्यताः–** किसी भी लिपि में सुनिश्चित पठनीयता होनी चाहिए। डा. भोलानाथ तिवारी के अनुसार, "इस दृष्टि से देवनागरी बहुत वैज्ञानिक लिपि है। रोमन की तरह उसमें "mal' को मल, माल, मैल या Aghan को अघन, अगहन पढ़ने की परेशानी उठाने की सम्भावना ही नहीं है।"

➢ **सार्वदेशिक प्रसारः–** देवनागरी लिपि भारत की लगभग सभी लिपियों के साथ सम्बन्धित है। उत्तर भारत की सभी लिपियां दसवीं शताब्दी की देवनागरी लिपि से उपजी है। उनका देवनागरी लिपि के साथ पर्याप्त साम्य है। भारत की लगभग सभी लिपियां ब्राह्मी लिपि से विकसित हुई है। इस प्रकार देवनागरी लिपि दक्षिण की लिपियों से भी सम्बन्धित है। देवनागरी अपनी इस विशेषता के कारण राष्ट्र लिपि बनने की अधिकारिणी बनी।

Scanned by TapScanner

➢ **वर्णमाला में एकरूपता व क्रमबद्धता:–** देवनागरी लिपि में शिरोरेखा के कारण एकरूपता परिलक्षित होती है। रोमन लिपि में वर्णों के छोटे बड़े रूप व आकार हैं। ऐसी भिन्नता देवनागरी लिपि में नहीं है। वर्णमाला के स्वरों में ह्रस्व व दीर्घ स्वर साथ–साथ हैं जिससे उनका अन्तर स्पष्ट हो जाता है। व्यंजनों को भी उच्चारण स्थान की दृष्टि से क वर्ग, च वर्ग, त वर्ग आदि वर्गों में विभाजित किया गया है। जिससे उनमें क्रमबद्धता व एकरूपता दृष्टिगोचर होती है। अतः इसके स्वर और व्यंजनों का वैज्ञानिक विभाजन है। इसमें 16 स्वर तथा 33 व्यंजन हैं। तीन संयुक्त व्यंजन क्ष, त्र और ज्ञ है।

➢ **मूक अक्षरों की अपेक्षा:–** देवनागरी लिपि में ऐसे कोई अक्षर नहीं है जो लेखन में है लेकिन उच्चरित नहीं है। रोमन लिपि में ऐसे कई मूक अक्षर हैं जिनका उच्चारण नहीं होता। जैसे–HONOUR में 'H' मूक अक्षर है। 'LISTEN' में 'T' मूक है। इस तरह अनेक ऐसे शब्द हैं जो वर्तनी में हैं लेकिन उच्चारण में नहीं। देवनागरी लिपि में ऐसे शब्दों का अभाव है।

➢ **देवनागरी के अक्षरों की सुंदरता:–** कलात्मक दृष्टिकोण से देवनागरी लिपि बहुत सुन्दर एवं आकर्षक है। इसके अक्षर बहुत सुन्दर एवं सुडोल हैं। प्रत्येक अक्षर में खड़ी लकीर व प्रत्येक शब्द के ऊपर शिरोरेखा इसकी सुन्दरता को बढ़ाती है। इसके अक्षरों के रूप एवं उनके अंग समानुपाती हैं।

➢ **वर्णमाला मात्रा की दृष्टि से पूर्ण:–** देवनागरी लिपि में ह्रस्व और दीर्घ मात्रा का स्पष्ट अन्तर है। रोमन लिपि में ह्रस्व और दीर्घ दोनों के लिए एक ही वर्ण प्रयुक्त किया जाता है। जैसे 'A' अ, आ के लिए 'E' इ, ई के लिए तथा 'U' उ, ऊ के लिए प्रयुक्त होते हैं। अतः देवनागरी की वर्णमाला मात्रा की दृष्टि से परिपूर्ण है।

➢ **वर्णमाला का वैज्ञानिक वर्गीकरण:–** देवनागरी लिपि में स्वरों और व्यंजनों को वैज्ञानिक ढंग से क्रमबद्ध किया गया है। इसमें 14 स्वर और 35 मूल व्यंजन हैं। तीन संयुक्त व्यंजन क्ष, त्र, ज्ञ हैं। कुछ और आवश्यक व्यंजन जैसे ड., ढ़, क़, ख़, फ़ आदि भी इस लिपि में समाहित कर लिए गए हैं।

Scanned by TapScanner